जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 11 सितम्बर, 2020

जामिया प्रोफेसर का शोध पत्र 'कर्स ऑफ द मम्मी-जीः द इन्फ्लुएंस ऑफ मदर्स-इन-लाॅ आन वीमेन इन इंडिया' अमेरिकन जर्नल द्वारा प्रकाशित

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के भूगोल विभाग डॉ प्रवीण कुमार पाठक ने 'कर्स ऑफ द मम्मी जीः द इंफ्लुएंस ऑफ मदर्स इन लाॅ आन वीमेन इन इंडिया' नामक एक शोध पत्र का सह-लेखन किया है। यह शोध पत्र, मशहूर पत्रिका, 'अमेरिकन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर इकोनॉमिक्स' (2020) **https://doi.org/10.1111/ajae.12114** में प्रकाशित हुआ है।

यह पेपर 'विकासशील देशों में महिलाओं के सामाजिक नेटवर्क, प्रजनन स्वास्थ्य और कल्याण के प्रयोगात्मक साक्ष्य' पर एक शोध है। डॉ पाठक के अलावा इस प्रोजेक्ट के अन्य शोधकर्ता हैं डॉ कैटालिना हरेरा-अलमान्ज़ा (नॉर्थईस्टर्न यूनिवर्सिटी, यूएसए), डॉ एस अनुकृति (बोस्टन कॉलेज, यूएसए), और डॉ महेश कर्रा (बोस्टन यूनिवर्सिटी, यूएसए)।
इस शोध में इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि परिवार के सदस्यों, खासकर पितृसत्तात्मक समाजों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधात्मक सामाजिक मानदंड और अन्य बाधाएं, सामाजिक नेटवर्क से महिलाओं की पहुंच और लाभों को कैसे सीमित कर देती हैं।

रिसर्च टीम ने ग्रामीण भारत में युवा विवाहित महिलाओं के सामाजिक नेटवर्क का अध्ययन करके पाया कि कैसे किसी घर के इंटर-जेनेरेशन पावर डायनामिक्स उनके नेटवर्क गठन को प्रभावित करते हैं। उत्तर प्रदेश के प्राथमिक आंकड़ों का उपयोग करते हुए, उन्होंने पाया कि सास के साथ रहने वाले सह निवासी कैसे उस घर की बहु की घर के बाहर सामाजिक संबंध बनाने की क्षमता और गतिशीलता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। इसमें उस बहु की स्वास्थ्य, प्रजनन और परिवार कल्याण के फैसले करने की काबलियत भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होती ।

शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि सास का प्रतिबंधक व्यवहार, सास और बहु के प्रजनन संबंधी विरोधाभासी सोच को जन्म देता है। सास का ऐसा व्यवहार होता है कि उसकी बहु का घर से बाहर कम से कम निकले, इससे उसे न सिर्फ सहेलियों की कमी होती है बल्कि परिवार

नियोजन क्लिनिक जाने और आधुनिक गर्भनिरोधक का उपयोग करने के उसके विकल्पों पर भी अंकुश लग जाता है।

शोध दल ने पाया कि कि बाहर की सहेलियां (क) परिवार नियोजन की सामाजिक स्वीकार्यता के बारे में बहु की सोच को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं और (ख) बहु को सहेलियों का साथ मिलने से हेल्थ क्लीनिक जाने की उसकी गतिशीलता भी बढ़ जाती है।

इस अध्ययन के लिए फील्डवर्क मुख्य रूप नॉर्थईस्टर्न यूनिवर्सिटी टीयर-1 द्वारा समर्थित था जिसका अनुदान सहयोग, बोस्टन यूनिवर्सिटी ग्लोबल डेवलपमेंट पॉलिसी सेंटर में ह्यूमन कैपिटल इनिशिएटिव की पूरक निधि से हुआ।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक